वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधि

किसान वर्मीकम्पोस्ट का बेड बनाते वक्त ऐसी जगह का चुनाव करें जहां पर ज़मीन समतल और हल्की ऊंचाई पर हो या फिर जहां पर बरसात का पानी एकत्रित न होता हो। अगर पानी भराव होता है तो बरसात के मौसम में खाद का पोषक तत्व पानी के साथ बह जाएगा और गुणवत्ता वाली खाद नहीं बन पाएगी। किसान वर्मीकम्पोस्ट बेड नार्मल ईंट से या फिर कंकरीट से बनवा सकते हैं वर्मीकम्पोस्ट बेड की लम्बाई अपनी आवश्यकतानुसार 8 से 10 फीट, चौडाई 3 फीट, और एक फीट ऊंची या कहें एक फीट गहरी क्यारी या बेड बनाते हैं। इस बात का ध्यान रखे हैं कि दो क्यारियों या बेड़ों के बीच में 0.5 से 1 फीट चौड़ा रास्ता छोड़ दें। बेड़ की लम्बाई आवश्यकतानुसार अधिक कर सकते हैं, लेकिन इस बात का ध्यान रखें की बेड़ की चौड़ाई 3 फीट से अधिक न हो।

बेड में खाद के लिए गोबर की भराई वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने के लिए बने बेड में गोबर डालने से पहले उसकी निचली सतह पर काले रंग की पतली पॉलिथीन या फिर 3 से 4 इंच गेहूं या धान का भूसा या पराली की परत लगा देते हैं अगर धान या गेहूं की पराली की परत लगाते हैं तो किसान को पानी का छिड़काव ज़रूर करना चाहिए। इसके बाद बेड में 15 से 20 दिन सड़े हुए गोबर, कृषि अवशेष या पेड़ पौधों के पत्तों को एक से 1.5 फीट ऊंची परत लगा देनी चाहिए और जरूरत के अनुसार पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। एक से दो दिन के लिए छोड़ देते हैं। जिससे की उसका तापमान कम हो जाए। इस बात का ध्यान देना चाहिए कि बेड में ताजे गोबर का इस्तेमाल ना हो क्योंकि गोबर में मिथेन गैस की मात्रा अधिक मात्रा में पाई जाती है, जो केंचुओं के लिए हानिकारक होती है।

केंचुए की मात्रा और बेड में केंचुआ छोड़ने की विधि

केंचुए की खाद बनाने में सबसे मुख्य भूमिका केंचुए की होती है। प्रति क्विंटल गोबर और कार्बनिक पदार्थ के हिसाब से एक किलोग्राम केंचुए की मात्रा पर्याप्त होती है। बेड में केचुआ छोड़ते समय इस बात का ध्यान रखें, कि बेड का तापमान 20-30 डिग्री सेंटीग्रेट के बीच हो, इससे अधिक तापमान होने पर केंचुए मर सकते हैं। बेड में केंचुए छोड़ने के बाद बेड के ऊपर जूट की बोरी, धान या गेहूं की पराली या फिर अन्य फसल अवशेष से बेड को ढक दिया जाता है। जिससे बेडों पर सूरज की सीधी रोशनी न पड़े

क्योंकि केंचुओं को अंधेरा पसंद होता है। सड़े हुए गोबर को व कार्बनिक पदार्थ को केंचुए खाना शुरु कर देते हैं और खाये हुए पदार्थ को अपना मल के रूप में बेड के ऊपरी सतह पर विसर्जित कर देते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट पिट की तैयारी कैसे करें

वर्मीकम्पोस्ट पिट के लिए किसी भी व्यावहारिक आकार का खाद गड्ढा किसी खेत, बगीचे या आंगन में बनाया जा सकता है। ये एक एकल गड्ढा, दो गड्ढे, या किसी भी आकार में उपयुक्त पानी के आउटलेट के साथ ईंट और मोर्टार से बना एक टैंक हो सकता है (उचित आकार 2 मीटर x 1 मीटर x 0.75 मीटर है)। चींटियों की समस्या से निपटने के लिए, वर्मीपिट्स की पैरापेट दीवार के बीच में एक पानी का खंभा बना लें। गड्ढा केंचुओं के लिए एक कमरे से, जिसमें पूरी तरह से खाद सामग्री होती है, इससे केचुओं का उस कक्ष में लगातार जाना आसान बन जाता है। जिसमें पहले से तैयार किया गया कचरा होता है।

वर्मीकम्पोस्ट बनाते समय सावधानियां

केंचुआ खाद बनाते समय निम्न सावधानियां रखनी चाहिए, जैसे-

- मिट्टी में किसी भी तरह के पत्थर, कांच, प्लास्टिक या धातु के टुकड़े नहीं होने चाहिए।
- इसके मिश्रण में नमी होना जरूरी है। नमी की कमी न हो। ध्यान रखें खाद के मिक्सचर को बहुत ज्यादा पानी नहीं देना चाहिए, इससे मिट्टी में हवा का प्रवाह अवरुद्ध हो सकता है।
- इस खाद को बनाते समय तापमान 30 से 35 डिग्री सेंटीग्रेट से अधिक नहीं होना चाहिए।
- अपशिष्ट के मिश्रण में किसी भी प्रकार के रसायन या कीटनाशक मौजूद नहीं होना चाहिए और इनके छिड़काव से बचना भी चाहिए।

पौधों के लिए वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग कब करें –

आर्गेनिक गार्डनिंग में एक अच्छी खाद के रूप में वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल किया जाता है। वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल किसी भी मौसम में और पौधों की ग्रोथ के किसी भी चरण में इसका उपयोग किया जा सकता है। इसे पौधों की मिट्टी के साथ मिक्स कर लिया जाता है। आप पौधे लगाने के लिए पौष्टिक मिट्टी तैयार करते समय या पौधे लगे गमले की मिट्टी को ज्यादा उपजाऊ बनाने के लिए इसे मिट्टी में डाल सकते हैं। अगर आप पौधे लगाते समय वर्मीकम्पोस्ट को मिट्टी में अच्छी तरह मिलाते हैं, तो बार-बार इसका उपयोग करने की जरूरत नहीं होती है। अगर आप पौध लगे गमले की मिट्टी में वर्मीकम्पोस्ट डालते हैं, तो एक महीने से पहले इसका दोबारा प्रयोग न करें।